क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः ।

तितीषुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।2।।

अन्वयः सूर्यप्रभवः वंशः क्व, अल्पविषया (मम) मतिः च क्व, (अहं) दुस्तरं सागरं मोहात् उडुपेन तितीर्षुः अस्मि।

अनुवादः कहां तो सूर्य से उत्पन्न वंश (रघुकुल) और कहां सीमित ज्ञान वाली मेरी बुद्धि (दोनों में बहुत बड़ा अन्तर है)। तथापि मैं उसे (रघुकुल को) मोहवश (मूर्खतावश) उसी प्रकार पार करना (वर्णन करना) चाहता हूं जैसे कोई छोटी डोंगी (नौका) से दुस्तर (कठिनता से पार किये जाने योग्य) समुद्र को पार करना चाहता हो।

टिप्पणियां :

क्व क्व शब्द का दो बार प्रयोग इस तथ्य को प्रकट करता है कि भगवान सूर्य से उत्पन्न रघुवंश (की महत्ता) एवं महाकवि कालिदास की प्रतिभा में महान अन्तर है। **''द्वौ क्वशब्दौ महदन्तरं सूचयथः''। (मल्लिनाथ)**

सूर्यप्रभवः सूर्यः प्रभवः यस्य इति सूर्यप्रभवः (बहुव्रीहि), वंश का विशेषण। वह वंश जिसका जन्म (आरम्भ) सूर्य से हुआ है अर्थात् सूर्यवंश (रघुवंश)।

अल्पविषया अल्पः विषयो यस्या सा अल्पविषया (बहुव्रीहि), मतिः का विशेषण। सीमित है (ज्ञान का) विषय जिसका ऐसी मेरी बुद्धि, सीमित ज्ञान रखने वाली मेरी बुद्धि।

तितीर्षुः तरितुं इच्छुः, (धातु तॄ+सन्+उ) तैरने अर्थात् पार करने की इच्छा करने वाला मैं (कालिदास)।

दुस्तरम् दुःखेन तरितुं शक्यम् 'सागर' का विशेषण। वह समुद्र जिसे पार करना बड़ा कठिन है, कष्ट से पार करने के योग्य। यहां दुस्तर सागर से अभिप्राय रघुवंश से है।

उडुपेन छोटी नौका, डोंगी। यह स्पष्ट संकेत अल्पविषया कवि-बुद्धि से है।